● **सुनो, पढ़ो और गाओ :**

५. बसंत गीत

- चंद्रप्रकाश 'चंद्र'

जन्म : ३.अक्टूबर १९५७, बुलंदशहर (उ.प्र.) **रचनाएँ :** खयाल ऊपर और ऊपर (लघुकथा), टेलीफिल्म, गीत, बालगीत आदि ।
परिचय : चंद्रप्रकाश 'चंद्र' जी कवि, लेखक, निर्देशक, अभिनेता, बहुप्रतिभा के धनी हैं । आपने विविध पत्र-पत्रिकाओं में लेखन किया है ।
प्रस्तुत गीत में कवि ने वसंत ऋतु में होने वाले परिवर्तन, प्रभाव और प्राणियों में फैले उल्लास को दर्शाया है ।

L4KFN3

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।

कलि-कलि करत कलोल कुसुम मन, मंद-मंद मुस्कायो ।
गुन-गुन-गुन-गुन गूँजे मधुप गन मधु मकरंद चुरायो ।।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।

बन-बन-बाग-बाग-बगियन में, सुहनि सुगंध उड़ायो ।
ठुमकि-ठुमकि मयूरा नाचत, गीत कोयलिया गायो ।।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।

पीली-पीली सरसों फूली, अरु बौर अमवा पे छायो ।
हरी-हरी मटर बिछौने ऊपर अमित रंग बरसायो ।

सजि आयो रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।
अजी गाओ रे, ऋतु बसंत सजि आयो ।।

❑ उचित लय-ताल, के साथ गुट में गीत गवाएँ । मौसम के अनुसार होने वाले परिवर्तन पर चर्चा करें । कविता में आए गुन-गुन, बन-बन जैसे अन्य ध्वन्यात्मक शब्द बताने के लिए प्रेरित करें । अधोरेखांकित शब्दों के अर्थ शब्दकोश में देखने के लिए प्रोत्साहित करें ।